

<u>अपीलान्त</u>	<u>बनाम</u>	<u>रेस्पोडेन्ट्स</u>
1. मठाधीश श्री कैलाशनाथ जी महाराज डोली बनाम आसण श्री चिडियानाथ जी खास मुख्तयारनामा जरिये गिरीवर नाथ मौजा पालासनी तहसील, जिला जोधपुर		1. सम्पतराम पुत्र स्व0 पीराराम 2. मोती पुत्र स्व0 पीराराम 3. रतनलाल पुत्र स्व0 पीराराम 4. दाखूदेवी पत्नी स्व0 चम्पालाल सभी जातियान खटिक, निवासी पालासनी तहसील व जिला जोधपुर 5. तहसीलदार जोधपुर

अपील अन्तर्गत धारा 75 राजस्थान भू राजस्व अधि. 1956 विरुद्ध आदेश न्यायालय सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी जोधपुर के दिनांक 15.01.2021 राजस्व विविध प्रार्थनापत्र संख्या 82/20 प्रार्थी कलावती वगैराह बनाम मठाधीश श्री कैलाशनाथ वगैराह

उपस्थिति:—

1. श्री हेमन्त कुमार, अधिवक्ता अपीलान्त की ओर से।
2. श्री ईश्वरसिंह एवं श्री भागीरथ विश्‍नोई, अधिवक्ता रेस्पो.सं.1,3,4 की ओर से।
3. श्री नवलसिंह दहिया, राजकीय अधिवक्ता, रेस्पो0संख्या 2 की ओर से।

निर्णय

दिनांक: 9 दिसम्बर, 2022

1. अपीलान्त के द्वारा यह प्रथम राजस्व अपील अधिनस्थ न्यायालय उपखण्ड अधिकारी, जोधपुर के द्वारा पारित आदेश दिनांक 15.01.2021 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है।
2. अपीलान्त की अपील दर्ज की जाकर अधिनस्थ न्यायालय का मूल रेकॉर्ड एवं रेस्पोडेन्ट्स को जरिये नोटिस तलब किया गया। तत्पश्चात उपस्थित पक्षकारान अपीलान्त के अधिवक्ता एवं रेस्पो0 संख्या 1 व 2 के अधिवक्ताओं के द्वारा की गई बहस को सुना। दौरान सुनवाई अपीलार्थी के अधिवक्ता ने मुख्य रूप से यह कथन किया कि उक्त विवादित आराजियात खेत खसरा नं. 1275 रकबा 13.12 बीघा भूमि वर्तमान राजस्व रिकॉर्ड में डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी के नाम से डोली भूमि मौजा पालासनी की जमाबंदी पुस्तिका में दर्ज है।

3. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी ओर से लिखित बहस प्रस्तुत की तथा दौरान सुनवाई यह भी कथन किया कि उक्त अपील में अप्रार्थीया ने न्यायालय श्रीमान सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी जोधपुर के समक्ष एक राजस्व विविध प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 136 भू राजस्व अधिनियम बाबत् रेकॉर्ड दुरुस्ती करने हेतु प्रस्तुत किया एवं निवेदन किया की डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी के नाम खातेदारी भूमि के काफी खातों को कुछ लोगो ने पटवारी, भू अभिलेख निरीक्षक व तहसीदार से मिली भगत कर राजस्थान लैण्ड रिकॉर्ड नियम 1957 के नियम 166 के तहत शुद्धि पत्रों द्वारा



अतिरिक्त सभागीय आयुक्त
जोधपुर

करवा ली है। परन्तु कई खातों की भूमि आज भी डोली बनाम आसन के नाम दर्ज है।

4. इससे पूर्व तहसीलदार जोधपुर द्वारा उपरोक्त वर्णित भूमि बाबत धारा 166 के तहत तैयार शुद्धि पत्रों के सम्बन्ध में राज0 भू-राजस्व अधिनियम के तहत प्रकरण 136 में तैयार कर अपने कार्यालय के पत्रांक/भूअ./2019/5832 दिनांक 20.09.2019 को श्रीमान न्यायालय सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी जोधपुर को प्रेषित कर दिये। जिस पर उपखंड अधिकारी जोधपुर ने कार्यालय पत्रांक न्यायालय/2020/141 दिनांक 06/07/2020 को निर्देशों के साथ पुनः तहसीलदार जोधपुर को प्रेषित कर दिया। तहसीलदार जोधपुर ने अपने उपर आयी बला टालने हेतु उक्त प्रकरणों के शुद्धि पत्रों को अपने कार्यालय के पत्र क्रमांक भूअ./20 दिनांक 06.07.2020 को मूल ही उप तहसीलदार कुडी भगतासनी को प्रेषित कर नियमानुसार पालना कर रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिये। उपतहसीलदार कुडी भगतासनी ने कार्यालय क्रमांक/भूअ./2020/110 दिनांक 09/09/2020 को पुनः उक्त प्रकरण तहसीलदार जोधपुर को प्रेषित कर कहा कि राजस्थान भू राजस्व नियम 1957 के नियम 166 के अन्तर्गत केवल किसी लिपिकीय अशुद्धि को सही करने मात्र का प्रावधान है। जिसमें जमाबंदी के इन्द्राजात को दूसरी पडत में नकल करने में कोई भूल या किसी नामान्तरकरण को जमाबंदी में शामिल करने में हुई त्रुटि को ठीक करने हेतु फर्द बदर किया जाता है। उपरोक्त प्रकरणों में विभिन्न आदेश व परिपत्रों की पालना में नोट अंकित करना दर्ज है। अतः प्रकरण में ऐसे शुद्धि पत्र के जरिये स्वीकृत किया जाना नियमानुसार संभव नहीं है। तत्पश्चात तहसीलदार जोधपुर ने पत्रांक/भूअ./20/4183 दिनांक 14.09.2020 को मूल ही पटवारी हल्का पालासनी को भेजकर लेख है कि आप द्वारा पेश शुद्धि पत्र लिपिकीय अशुद्धि की श्रेणी में नहीं आता है अतः मूल ही पुनः लौटाया जाता है।
5. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि मठाधीश कैलाशनाथ जी की ओर से तहसीलदार जोधपुर को आसन की खातेदारी की संपूर्ण खसरा न भूमि का राजस्व रिकॉर्ड यानि खसरा बन्दोबस्त, खसरा गिरदावरी, नामान्तरकरण, जमाबंदी व ढाल बांछ का अवलोकन कर बताया कि उक्त विवादित भूमि डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी की खातेदारी की भूमि है न कि किसी निजी खातेदारों की है। जमाबंदी में लाल स्याही के नोटों का अंकन सही व सत्य है। तब तहसीलदार जोधपुर ने अपने कार्यालय क्रमांक राजस्व/2020/1224-1225 दिनांक 21.08.2020 को आदेश किया कि उक्त विषयान्तर्गत लेख है कि प्रार्थी के प्रस्तुत प्रार्थना पत्र मय राजस्व विभाग ग्रुप-6 विभाग राज जयपुर के परिपत्र क्रमांक 3(2)राज-6/2007/पार्ट/जयपुर दिनांक 12.09.2018 के तहत भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 91 के तहत कार्यवाही प्रस्तावित करना सुनिश्चित करें। जिसकी प्रति अपर जिला कलेक्टर (प्रथम) को पत्र प्रेषित कर प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित की। उक्त आदेश की पालना हेतु लगातार अपने कार्यालय पत्रांक 1337-38 दिनांक 14.9.2020, 1454 दिनांक 30.8.20, 1511-12 दिनांक 9.10.20, 1551-52 दिनांक 14.10.2020 व जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक राजस्व विविध/20/4211 दिनांक 5.10.2020 की प्रतियों एवं



अतिरिक्त सभागीय आयुक्त
जोधपुर

6. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि तहसीलदार जोधपुर द्वारा उक्त पत्रों के जरिये न्यायालय सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी पर दबाव बनाया जाता है जब उक्त प्रकरणों में इस प्रकार की कार्यवाही विचाराधीन चल रही थी। तहसीलदार का उक्त कृत्य न्यायालय को प्रभावित करने की श्रेणी में आता है। अपीलान्ट की ओर से न्यायालय उपखंड अधिकारी जोधपुर को उक्त प्रकरणों में विवादित खसरा भूमि डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी की खातेदारी भूमि होने के साक्ष्य में फार्म नंबर 3 के तहत प्रमाणित दस्तावेजों की निम्नांकित प्रतियाँ प्रस्तुत की गई हैं 1. खसरा बंदोबस्त 2. परचा खतौनी 3. परचा तजवीज लगान 4. खतौनी बंदोबस्त 5. खसरा गिरदावरी चौसले 6. ढाल बांछ 7. भू अभिलेख शाखा की नामान्तरकरण से संबंधित टिप्पणी 8. भू अभिलेख शाखा की जमाबंदी से संबंधित टिप्पणी 9. कलेक्टर के निजी सलाहकार की टिप्पणी व संलग्न राज्य राज्य सरकार के परिपत्र 10. राजस्थान टिनेन्सी अधिनियम 1955 में देवता/प्रतिमा की प्रास्थिति इत्यादि।

7. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि उक्त प्रस्तुत प्रमाणित दस्तावेजों पर अधिनस्थ न्यायालय ने न तो गौर किया और ना ही उक्त दस्तावेजों को परीक्षण किया। अपीलान्ट की ओर से मौखिक व लिखित बहस प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया कि उक्त प्रकरणों में जो प्रार्थी है उनसे संवत् 2011 से 2020 तक राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज मूल नामान्तरकरण जमाबंदी चौसाले व खसरा गिरदावरी की नकले मंगवाई जावे जिससे वस्तुस्थिति को खुलासा अपने आप हो जायेगा परंतु इस प्रकार की कार्यवाही अधिनस्थ न्यायालय ने कभी नहीं की यदि उक्त दस्तावेजों की नकले मंगवाते तो प्रकरण में निष्कर्ष और होता।

8. अपीलान्ट के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि संवत् 2020 तक के गिरदावरी चौसाले फार्म नं. 3 के जरिये अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर निवेदन किया गया था कि खसरा गिरदावरी आसन बनाम चिडियानाथ जी की नाम दर्ज है। प्रकरण के प्रार्थीया के नाम खसरा गिरदावरी में नाम नहीं है परंतु न्यायालय द्वारा प्रार्थीया को लाभ पहुंचाने की प्रबल नियत से 2013 तक की गिरदावरी में उनका नाम नहीं होने का जिक्र नहीं किया जो प्राकृतिक न्याय के विपरीत है।

9. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि अधिनस्थ न्यायालय द्वारा अपने आदेश में यह कहना की राजस्थान लैण्ड रिकॉर्ड नियम 1958 के नियम 166 के तहत इस प्रकार के रिकॉर्ड की भूल सुधार की जा सकती है। राजस्थान लैण्ड रिकॉर्ड नियम, 1957 के नियम 166 के तहत लिपिकीय अशुद्धि को सही करने ही का प्रावधान है। न्यायालय उपखंड अधिकारी जोधपुर उक्त विचाराधीन सभी 10 राजस्व प्रार्थना पत्रों/प्रकरणों में प्रार्थीगणों ने प्रार्थना पत्र अंतर्गत धारा 136 भू-राजस्व अधिनियम के तहत उनके राजस्व रेकर्ड को दुरस्ती करने हेतु राजस्व प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए हैं। परन्तु अधिनस्थ न्यायालय ने अपने आदेश के अंतिम पैरा में अंकित कर दिया कि "गलतियों का शुद्धिकरण भूमि अभिलेख अधिकारी किसी भी समय लिपिकीय गलती और



अतिरिक्त सभागीय आयुक्त
जोधपुर

प्रथमतः यह लिपिकीय त्रुटि की श्रेणी में नहीं आता है क्योंकि तहसीलदार द्वारा इस हेतु आदेश जारी किया गया एवं वर्तमान प्रार्थना पत्र में धारा 136 के अनुसार अन्य हितबद्ध पक्ष द्वारा उसकी स्वीकारोक्ति भी नहीं की गयी है इस प्रकार वह प्रार्थना पत्र स्वीकार योग्य नहीं है।”

10. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह कथन किया कि अधिनस्थ न्यायालय ने राजस्थान लैण्ड रिकॉर्ड नियम 1958 के नियम 166 के तहत इस प्रकार के रिकॉर्ड की भूल सुधार की जा सकती है और तहसीलदार जोधपुर को ऐसे निर्देश दिये जाते हैं। इस सम्बन्ध में यह निवेदन है कि उक्त प्रकरणों के प्रार्थीगणों के द्वारा धारा 166 की कार्यवाही हेतु अपने प्रार्थना पत्र में न तो कहीं जिक्र किया है और ना ही अपनी बहस में धारा 166 के तहत प्रकरणों की सुनवाई करने का अधिनस्थ न्यायालय से निवेदन किया है तो अधिनस्थ न्यायालय अपने श्रवणधिकार एवं क्षेत्राधिकार से परे जाकर अप्राकृतिक आदेश पारित कर दिया जो पूर्णतया अविधिक एवं अस्वीकार योग्य है। इसी प्रकार अन्य प्रकरण में वर्तमान तहसीलदार जोधपुर ने अपने पत्रांक भू.अ./स.स./2020/3134 दिनांक 14.07.2020 को उपखंड अधिकारी, जोधपुर से राजस्थान भू राजस्व (भू-अभिलेख) नियम 1957 के नियम 166 के तहत की जाने वाली कार्यवाही का स्पष्ट खुलासा करने का मार्गदर्शन देने का निवेदन किया था तब उक्त विषय में उपखंड अधिकारी, जोधपुर ने अपने पत्रांक राजस्व/2020/169 दिनांक 20.07.2020 के तहत तहसीलदार, जोधपुर को यह निर्देश दिया था कि “इस संबंध में भू राजस्व अधिनियम 1957 की धारा 166 फर्दबदर में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि उस अवस्था में जबकि परिवर्तन केवल किसी लिपिकीय अशुद्धि को सही करने हो अर्थात् जमाबंदी के इन्द्राज को दूसरी पडत में नकल करने में कोई भूल या किसी नामान्तरकरण को जमाबंदी में शामिल करने में हुई त्रुटि, जिसको सुधारने के लिए किसी नामान्तरकरण आदेश में परिवर्तन नहीं करना पड़े।” इस प्रकार वही न्यायालय अपने उक्त अपीलार्थी आदेश में इस प्रकार की कार्यवाही करने हेतु अपने क्षेत्राधिकार से परे जाकर प्रार्थीगणों की ओर से इस प्रकार प्रकार का अनुतोष न चाहने पर भी तहसीलदार जोधपुर को धारा 166 के तहत कार्यवाही करने हेतु निर्देशित कर रहा है जो न्यायालय की मंशा को दुषित करता है।

11. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने यह निवेदन किया कि डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी की खातेदारी भूमि के खातो में राजस्थान सरकार द्वारा जारी परिपत्रों में दिये गये आदेशों की पालना में ही तत्कालीन तहसीलदार द्वारा श्रीमान शासन सचिव देवस्थान विभाग जयपुर के पत्रांक प12(22)देव/91 दिनांक 07.03.2003 एवं जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प12(3)राज/भ.व./1698-1704 दिनांक 27.03.2003 तहसीलदार जोधपुर का आदेश क्रमांक भू.अ./2018/315-352 दिनांक 24.01.2018 की पालना में ही उक्त खसरान वाली डोली भूमि को आसन श्री चिडियानाथ जी के खाते में दर्ज किया गया है लेकिन न्यायालय श्रीमान सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी जोधपुर ने उक्त प्रकरणों में दिनांक 15.01.2021 को पारित आदेश में तहसीलदार



अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त
जोधपुर

166 के तहत इस प्रकार के रिकार्ड की भूल सुधार की जा सकती है। पत्रावली के द्वारा पूर्व में कुछ खसरो के इन्द्राजो को नोट नियम 166 के तहत दुरुस्त किया जाना पाया गया। अतः तहसील भू अभिलेख अधिकारी के रूप में तहसीलदार जोधपुर को यह निर्देश दिये जाते हैं कि ग्राम पालासनी तहसील व जिला जोधपुर में दर्ज रिकार्ड को नियम 166 के तहत भूल सुधार का इन्द्राज करें।

12. राज्य सरकार एवं जिला कलेक्टर व तहसीलदार, जोधपुर के आदेशानुसार ही दिनांक 24.01.2018 को राजस्व कार्मिकों के द्वारा उक्त वर्णित भूमि को पुनः डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ के नाम दर्ज की गयी है एवं उक्त कार्यवाही को तीन वर्ष बीत जाने के उपरांत अब उक्त प्रकार की कार्यवाही को मात्र भूल सुधार की श्रेणी में नहीं माना जा सकता है। न्यायालय श्रीमान सहायक कलेक्टर व उपखंड अधिकारी ने अपने क्षेत्राधिकार से परे जाकर अनाधिकार पूर्ण रूप से तहसीलदार जोधपुर को उक्त निर्देश दिये हैं। यह विधि एवं प्राकृतिक न्याय के विपरीत है। अतः अपीलान्त के अधिवक्ता का यह निवेदन है कि उक्त विषयान्तर्गत दिये गये अपीलाधीन आदेश दिनांक 15.01.2021 पर पुनः मनन कर उचित आदेश फरमाने का कष्ट करें।
13. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी लिखित बहस में यह अंकित किया गया कि सामाजिक कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश दांतीवाडा द्वारा जोधपुर जिले की सभी तहसीलों में डोली देवमूर्ति की भूमियों के निरन्तर खुर्दबुर्द की जा रही को पुनः अपने स्वरूप में लौटाने हेतु राजस्व विभाग के परिपत्र दिनांक 13.12.1991 की पालना करवाने हेतु जिला कार्यालय में अभियोग दर्ज करवाया। जिस पर तहसीलदार को दिशा-निर्देश दिये गये। तब उनकी पालना में दिनांक तहसीलदार जोधपुर ने दिनांक 13.6.19 के पत्र द्वारा अवगत कराया कि जोधपुर के समस्त पटवारी हल्का के द्वारा जमाबन्दी में लाल स्याही से देवमूर्ति की भूमियों के नोट अंकन कर दिये गये हैं।
14. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी लिखित बहस में यह अंकित किया गया कि तहसीलदार जोधपुर ने पटवारी पालासनी व भू0अ0निरीक्षक को निर्देश दिया कि फर्द बदर लैण्ड रिकार्ड नियम 1957 के नियम 166 के अन्तर्गत शुद्धि पत्र भकर उक्त लाल स्याही से अंकित नोटों को हटाकर प्रस्तुत किया जावें। उक्त आदेश के जवाब में उप तहसीलदार कूडी भगतासनी ने अपने पत्रांक 9.9.20 के द्वारा सूचित किया गया कि इन प्रकरणों में विभिन्न आदेश व परिपत्रों की पालना में नोट अंकित करना दर्ज दहै अतः शुद्धिपत्र स्वीकार किया जाना नियमानुसार सम्भव नहीं है।
15. तत्पश्चात अप्रार्थीगणों द्वारा अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष राज0 भू राजस्व अधिनियम की धारा 136 के तहत प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर रिकार्ड दुरुस्ती का निवेदन किया। अधिनस्थ न्यायालय के द्वारा दिनांक 15.01.2021 के अपीलाधीन आदेश द्वारा अप्रार्थीगणों के द्वारा दायर प्रार्थनापत्र को निस्तारित करते हुए आदेश दिया कि जमाबन्दी में अंकित नोट लिपिकिय त्रुटि की श्रेणी में नहीं आता है इसलिये यह प्रार्थना पत्र स्वीकार करने योग्य नहीं है लेकिन प्रार्थना पत्र अस्वीकार करने के बाद भी



अतिरिक्त सभागीय
जोधपुर
आयुक्त

16. उक्त अपीलाधीन आदेश पर दिनांक 25.01.2021 द्वारा न्यायालय हाजा ने स्थगन आदेश पारित कर रोक लगा दी। उक्त स्थगन आदेश की प्रति दिनांक 25.01.2021 को तहसीलदार जोधपुर को दी गई। परन्तु तहसीलदार जोधपुर ने उक्त आदेश की अवमानना करते हुए जमाबन्दी में शुद्धि पत्र का अंकन दिनांक 27.01.2021 करते हुए डोली भूमि के नोट काट दी।

17. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी लिखित बहस में यह अंकित किया गया कि जिन मूल सरकारी आदेशों व परिपत्रों की अनुपालना में जमाबन्दी में डोली भूमि का नोट अंकित किया गया उनको अप्रार्थीगणों द्वारा किसी मंच/न्यायालय में प्रश्नगत नहीं किया गया जो जिला जन अभाव अभियोग एवं सतर्कता समिति की बैठक में दिया गया था। जिसके क्रम में जिला कलेक्टर जोधपुर द्वारा तहसीलदारान को निर्देश दिये गये थे। उक्त कार्यवाही राजस्व विभाग के परिपत्र दिनांक 13.12.1991 तथा जिला कलेक्टर के आदेश की अनुपालना में की गई थी। ऐसे में धारा 166 लैण्ड रिकार्ड रूल्स के अन्तर्गत दुरुस्त करने की कार्यवाही सम्पादित नहीं की जा सकती थी और न ही ऐसी कार्यवाही की मांग अप्रार्थीगणों के द्वारा की गई थी।

18. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी लिखित बहस में यह अंकित किया गया कि अप्रार्थीगणों के द्वारा यह नहीं बताया कि उक्त भूमि किस प्रकार से उनके पूर्वजों को प्राप्त हुई। उक्त तथ्य अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष छुपाये गये। अधिनस्थ न्यायालय के द्वारा भी अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर अपीलाधीन आदेश पारित किया गया है जिसमें प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र स्वीकार योग्य नहीं है। भू अभिलेख अधिकारी के रूप में तहसीलदार जोधपुर को निर्देश दिये जाते हैं कि वे ग्राम पालासनी के उक्त खसरान भूमि में दर्ज रिकार्ड को नियम 166 के तहत भूल सुधार का इन्द्राज करें। इसके अतिरिक्त अपीलाधीन प्रकरण धारा 136 राज0 भू राजस्व अधिनियम के क्षेत्र में भी नहीं आता है जिसमें यह निर्धारित है कि "गलतियों का शुद्धिकरण:-भूमि अभिलेख अधिकारी किसी भी समय, किसी लिपिकीय गलती ओर ऐसी गलतियों को विहित रीति से शुद्ध कर सकेगा या उन्हें शुद्ध करवा सकेगा जिनका अधिकार-अभिलेख या रजिस्टर में कर दिया जाना हितबद्ध पक्षकार स्वीकार करें।" इससे स्पष्ट है कि शासकीय आदेशों की पालना में विवादित भूमि को डोली आसण श्री चिडियानाथ जी महाराज के खातेदारी नोट में दर्ज किया जाना धारा 136 की परिभाषा में किसी "गलतियों" या "लिपिकीय त्रुटि" की श्रेणी में नहीं आता है।

19. अपीलार्थी के अधिवक्ता ने अपनी लिखित बहस में यह अंकित किया गया कि अप्रार्थीगणों का मामला धारा 166 राज0 लैण्ड रिकार्ड नियम 1957 के अन्तर्गत भी नहीं आते थे जिसमें "नियम 166 रिकार्ड में लेखनी की भूलों की दुरुस्ती के लिये आदेश फर्द बदर लिये जाये। जमाबन्दी के इन्द्राजात, पश्चात के रिकार्ड में तब तक नहीं बदले जाये, जब तक कि इस प्रयोजन हेतु नामा0 में परिवर्तन करने के लिये पूर्व में आदेश प्राप्त न कर लिया जाये, अलावा उस अवस्था में, जबकि परिवर्तन केवल किसी



अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त
जोधपुर

लिपिकिय अशुद्धि को सही करना हो, अर्थात जमाबन्दी के इन्द्राज को दूसरी पडत में नकल करने में कोई भूल या किस नामा० की जमाबन्दी में शामिल करने में हुई त्रुटि, जिसको सुधारने के लिये किसी नामा० आदेश में परिवर्तन नहीं करना पड़े। निम्न बताये गये अपवाद के अधिनस्थ, पश्चात के अभिलेखों में ऐसी गलतियों को ठीक करने के लिये आदेश फर्द बदर में किये जायेगे। इसके लिये प्रारूप पी-27 निर्धारित है। ”

20. इस प्रकार स्पष्ट है कि अपीलाधीन प्रकरण इस धारा 166 के तहत भी नहीं आते थे। ऐसे में अधिनस्थ न्यायालय द्वारा धारा 136 राज० भू राजस्व अधिनियम के अन्तर्गत प्रस्तुत अप्रार्थीगणों के आवेदन पर आदेश दिनांक 15.01.2021 द्वारा स्वप्रेरणा से धारा 166 के अन्तर्गत विवादित भूमि के सम्बन्ध में इन्द्राज दुरुस्ती का निर्देश दिया जाना विधि विरुद्ध अतार्किक व मनमानी पूर्ण था, साथ ही नियम 166 के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारिता से परे है। अतः अधिनस्थ न्यायालय के द्वारा पारित अपीलाधीन आदेश विधि विपरित पारित होने से निरस्त करने योग्य है जो निरस्त किया जावे वं न्यायालय हाजा के स्थगन आदेश दिनांक 25.01.2021 के प्रभावी रहने के बावजूद भी शुद्धिपत्र के जरिये किये गये इन्द्राज को हटाते हुए विवादित भूमि को जमाबन्दी में पुनः डोली आसण श्री चिडियानाथ जी महाराज के खाते में दर्ज किये जाने का लाल स्याही से नोट अंकित करने का आदेश प्रदान करावें। अपने कथनों के समर्थन में निर्णय नजीर 2021 (1) आरआरटी पेज 622, 2020 (1) आरआरटी पेज 91, 4721/2020 श्री ठाकुर जी महाराज ट्रस्ट बनाम राज० राज्य, उच्चतम न्यायालय के जगपालसिंह वगैराह बनाम पंजाब राज्य एआईआर, 2011 सुप्रीम कोर्ट पेज 1123 प्रस्तुत की।

21. प्रत्युत्तर में रेस्पोंडेन्ट सं० 1 के योग्य अधिवक्ता ने यह निवेदन किया कि उनकी ओर से अधिनस्थ न्यायालय सहायक कलेक्टर एवं उपखंड अधिकारी जोधपुर के समक्ष एक राजस्व विविध प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 136 भू राजस्व अधिनियम बाबत् रिकॉर्ड दुरुस्ती करने हेतु प्रस्तुत कर निवेदन किया कि उक्त खेत खसरा संख्या 1275 रकबा 13.12 बीघा भूमि प्रार्थीगण के पिता पीरा वल्द सुखा कौम खटीक के नाम दर्ज थी। पीरा वल्द सुखा का देहान्त होने के पश्चात यह खसरा उनके पुत्र चम्पालाल, सम्पतराज, मोतीराम, रतनलाल के नाम खातेदारी दर्ज हुई। चम्पालाल पुत्र पीरा का देहान्त होने पर उनके वारिस श्रीमती दाखूदेवी पत्नी चम्पालाल के नाम दर्ज हुई। चारों भाईयों ने आपसी सहमति से उक्त भूमि बंटवाडा भी कर लिया है जिसका नामा० संख्या 1583 की प्रति संलग्न है। यह है कि राजस्व रिकॉर्ड जमाबन्दी 2058 से 2061 उक्त खसरे पर लाल स्याही द्वारा डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ का नोट अंकित है। प्रार्थीगण का नाम जमाबन्दी सम्वत 2058 से 2061 खाता संख्या 232 में ख०सं० 1275 में श्रीमान शासन सचिव देवस्थान विभाग जयपुर के पत्रांक प12(22)देव/91 दिनांक 07.03.2003 एवं जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प12(3)राज/भ.व./1698-17404 दिनांक 27.03.2003 व इस कार्यालय के आदेश क्रमांक भू.अ./2018/315-659 दिनांक 24.01.2018 की प्रमाण में जो भी जमाबन्दी आसण श्री चिडियानाथ जी के खाते में दर्ज



अतिरिक्त सभागीय आयुक्त
जोधपुर

ही कोई नामा० दर्ज हुआ। उक्त परिपत्र में स्पष्ट है कि अगर सेटलमेन्ट के समय खतौनी बन्दोबस्त डोली मंदिर के नाम दर्ज है तो उक्त खातेदारी डोली मंदिर के नाम पुनः दर्ज कर दी जावे।

23. इस प्रकार की कार्यवाही किसी भी राजस्व कर्मचारी को रेवेन्यू रेकॉर्ड से खातेदारी हटाने का अधिकार नहीं था। राजस्व कर्मचारियों को मात्र पूर्व की जमाबन्दी को ही पुनः रिपिट करने का क्षेत्राधिकार रहता है। सक्षम न्यायालय के आदेश या नामा० की कार्यवाही के जरिये ही खातेदार का नाम हटाया जा सकता है। या फिर किसी वसीयत, बेचाननामा या अन्य दस्तावेज निष्पादन के आधार पर हटाया जा सकता है। परन्तु इस प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं हुई। खतौनी बन्दोबस्त सम्वत 2012-2058 में प्रार्थीगण के पिता पीरा वल्द सुखा के नाम खातेदारी दर्ज है। इस कारण प्रार्थीगण ने अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष जमाबन्दी में हुई रेकॉर्ड की हेराफेरी को रेकॉर्ड दुरुस्ती का प्रार्थना पत्र पेश किया। रेवेन्यू बोर्ड, उच्च न्यायालय व उच्चतम न्यायालयों ने स्पष्ट सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि किसी भी खातेदार का नाम खातेदारी से हटाने से पहले उसको नोटिस व सुनवाई का मौका देने आवश्यक होता है लेकिन उपरोक्त प्रकरण में सुनवाई का किसी प्रकार से कोई मौका दिये बिना ही रेकॉर्ड में परिवर्तन करने की कार्यवाही कर दी जो प्राकृतिक न्याय सिद्धान्तों के विपरित था।

24. रेस्पों. संख्या 1 के अधिवक्ता ने कथन किया कि रेस्पों. संख्या 1 के अधिवक्ता ने कथन किया कि परिपत्र दिनांक 7.3.2003 का हवाला देते हुए जमाबन्दी सम्वत 2058-61 में खातेदारी भूमि में से उनके नाम को हटाकर डोली मंदिर के नाम दर्ज कर दी गई। जागीरी प्रथा के खत्म होने पर जमाबन्दी सम्वत 2012 में जो काश्तकार दर्ज थे उनके नाम खातेदारी दर्ज होने का प्रावधान किया गया था। इसके अतिरिक्त तहसीलदार, जोधपुर के द्वारा राजस्व रेकॉर्ड जमाबन्दी में डोली की जगह खातेदार अपने स्वप्रेरण से दर्ज कर दिये गये थे। रेस्पोंडेन्टस की ओर से अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष सेटलमेन्ट परचा, मिसल बन्दोबस्त, काश्तकारों के नाम दर्ज हुए प्रमाण पेश किये गये थे मिसल बन्दोबस्त में भोक्ता डोली तथा उपभोक्ता काश्तकार दर्ज किये हुए है। अपीलाधीन प्रकरणों में रेस्पोंडेन्ट के पूर्व खातेदार व्यक्तियों के नाम जमाबन्दी सम्वत 2058-61 में खातेदारी भूमि में से उनके नाम को हटाकर डोली मंदिर के नाम दर्ज कर दी गई। पटवारी द्वारा शुद्धिपत्र इन्द्राज कर भू०अ०निरीक्षक के समक्ष प्रतिवेदन पेश किया। जमाबन्दी सम्वत 2058-61 खाता संख्या 24, 44, 52, 462, 49, 63, 497, 522, 545, 566 व 571, 590 की खातेदारी भूमि को तब भू०अ०निरीक्षक ने अपनी सहमति जाहिर की, उक्त सहमति के आधार पर प्रमाणितकर्ता तहसीलदार ने सभी खाते स्वीकृत कर दिये थे जबकि प्रार्थीया के उक्त सम्पूर्ण खातों में खातेदारी का नाम हटाकर जमाबन्दी सम्वत 2058-61 में डोली के दर्ज कर दिये थे। जिनको दुरुस्ती करने हेतु अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष आवेदन किया था, परन्तु अधिनस्थ न्यायालय के द्वारा रेस्पों०/प्रार्थीगणों के आवेदन को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया था कि धारा 136



अतिरिक्त सभागीय आयुक्त
जोधपुर

और हितबद्ध पक्ष (तहसीलदार द्वारा उक्तकी स्वीकारोक्ति नहीं की गई बताई। साथ ही तहसीलदार जोधपुर को राज० लेण्ड रिकार्ड नियम 1958 के नियम 166 के तहत इस प्रकार के रिकार्ड की भूल सुधार किया जाना तथा प्रार्थीगणों के उक्त खसरों के इन्द्राजों के नोट नियम 166 के तहत दुरुस्त किया जाना उचित बताते हुए अपने अपीलाधीन आदेश के द्वारा निर्देशित किया गया था जो उचित होने से बहाल रखे जाने योग्य है। रेस्पों की ओर से अपने कथनों के समर्थन में अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष राजस्व रेकॉर्ड जमाबन्दी, खतौनी बन्दोबस्त, तहसीलदार जोधपुर के द्वारा किये गये शुद्धि आदेशों इत्यादि की प्रतियाँ प्रस्तुत की थी। अतः अपीलान्त की ओर से प्रस्तुत की गई अपील को खारिज किया जावे एवं अधिनस्थ न्यायालय के द्वारा पारित अपीलाधीन आदेश को बहाल रखा जावे।

25. रेस्पों संख्या 2 की ओर से उपस्थित राजकीय अधिवक्ता ने अधिनस्थ न्यायालय की ओर से पारित अपीलाधीन आदेश को उचित बताते हुए अपीलान्त की अपील अस्वीकार करने का कथन किया।

26. हमने पक्षकारान के अधिवक्ता द्वारा की गई बहस सुनी एवं उस पर मनन किया तथा अपील मीमों, अधिनस्थ न्यायालय के मूल रेकॉर्ड इत्यादि का गंभीरतापूर्वक अवलोकन किया। जिससे यह पाया गया कि अधिनस्थ न्यायालय में तहसीलदार जोधपुर द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट अनुसार "उक्त खेत खसरा संख्या 1275 रकबा 13.12 बीघा भूमि प्रार्थीगण के पिता पीरा वल्द सुखा कौम खटीक के नाम दर्ज थी। पीरा वल्द सुखा का देहान्त होने के पश्चात यह खसरा उनके पुत्र चम्पालाल, सम्पतराज, मोतीराम, रतनलाल के नाम खातेदारी दर्ज हुई। चम्पालाल पुत्र पीरा का देहान्त होने पर उनके वारिस श्रीमती दाखूदेवी पत्नी चम्पालाल के नाम दर्ज हुई। चारों भाईयों ने आपसी सहमति से उक्त भूमि बंटवाडा भी कर लिया है जिसका नामा० संख्या 1583 की प्रति संलग्न है। यह है कि राजस्व रेकॉर्ड जमाबन्दी 2058 से 2061 उक्त खसरे पर लाल स्याही द्वारा डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ का नोट अंकित है। यह है कि प्रार्थीगण का नाम जमाबन्दी सम्वत 2058 से 2061 खाता संख्या 232 में ख०सं० 1275 में श्रीमान शासन सचिव देवस्थान विभाग जयपुर के पत्रांक प12(22)देव/91 दिनांक 07.03.2003 एवं जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प12(3)राज/भ.व./1698-17404 दिनांक 27.03.2003 व इस कार्यालय के आदेश क्रमांक भू.अ./2018/315-659 दिनांक 24.01.18 की पालना में डोली बनाम आसन श्री चिडियानाथ जी का नोट लाल स्याही से अंकित किया गया है।

27. राजस्थान सरकार के राजस्व विभाग (ग्रुप-6) राज० जयपुर के परिपत्र क्रमांक प०कः 3 (2) राज-6/2007/14 जयपुर दिनांक 24.05.2007 अनुसार "ऐसी भूमि के सम्बन्ध में जो मंदिर माफी की थी, के सम्बन्ध में राज० भूमि सुधार तथा जागीर पुर्नग्रहण अधिनियम 1952 की धारा 09 में प्रावधान किया गया है। इस अधिनियम के प्रभावी होने के समय जो व्यक्ति राजस्व रिकार्ड में पटटेदार, खादिमदार या अन्य किसी नाम से दर्ज थे, वे निरन्तर खातेदार बने रहेंगे। धारा 09 निम्न प्रकार है:- "जागीर



अतिरिक्त संभागीय आयुक्त
जोधपुर

राजस्व अपील संख्या 113/2022 अनवान कैलाशनाथ बनाम सम्पतराज वगैराह

भूमियों में खातेदारी अधिकार—जागीर भूमि के प्रत्येक काश्तकार को जो इस अधिनियम के प्रारम्भ के समय राजस्व अभिलेखों में एक खातेदार, पट्टेदार, खादिमदार के रूप में या किसी अन्य के रूप में जिसमें यह अन्तर्हित हो कि काश्तकार को काश्तकारी में आनुवांशिक और पूर्ण अन्तरण के अधिकार प्राप्त हैं, दर्ज हैं, ऐसे अधिकार प्राप्त रहेंगे और वह ऐसी भूमि के सम्बन्ध में खातेदार काश्तकार कहलायेगा।”

28. हस्तगण प्रकरण में राजस्व रिकार्ड के अवलोकन से उक्त भूमियों में खतौनी बन्दोबस्त के समय रेस्पोंडेंटस के पूर्वज कॉलम नं. 4 में उपभोक्ता के रूप में दर्ज थे। तथा खतौनी बन्दोबस्त में “.....सा देह खातेदार” दर्ज रिकार्ड है। जागीर सेटलमेन्ट ऑफिसर, जोधपुर द्वारा जारी पर्चा लगान मौजा पालासनी के रजिस्टर नम्बर 141 के पर्चा नम्बर 13 के कॉलम संख्या 01 में पीरा वल्द सुखा कौम खटीक सा0 देह खातेदार दर्ज है। विश्लेषण पश्चात पाया है कि जमाबन्दी सम्वत 2058—2061 में पटवारी हल्का द्वारा बिना जाँच किये जमाबन्दी में नोट अंकित किया जाना पाया है। अतः अधिनस्थ न्यायालय के आदेश में किसी प्रकार के हस्ताक्षेप की गुंजाइश प्रतीत नहीं होती है।

29. अतः उपरोक्त समस्त तथ्यों पर विवेचन विश्लेषण करने के उपरान्त अपीलान्त की अपील सारहीन व आधारहीन होने से अस्वीकार की जाती है निर्णय आज दिनांक 09 दिसम्बर, 2022 को सरे इजलास सुनाया गया।



(ओ0 पी0 बिश्नोई)
अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त
जोधपुर